

## भारत एवं ग्लोबल साउथ

### प्रलिस के लयल:

ग्लोबल साउथ, ग्लोबल नॉरथ, G20, UNSC, BRI, हरतल रुरा कोष ।

### मेन्स के लयल:

भारत की G20 अधयकषता संबधी चुनौतयलँ और आगे की राह ।

## चरचा में कयलँ?

भारत द्वारा [G20 की अधयकषता](#) प्राप्त करने के साथ ही, भारत के वदलश मंत्रल ने "वैश्वकल दकषणल देशलँ की आवाज़" के रूप में भारत की भूमकल पर बल दयल, जसकल वैश्वकल मंचलँ पर परतनलधलतलत्व कम है ।

## ग्लोबल नॉरथ और ग्लोबल साउथ:

- 'ग्लोबल नॉरथ' से तात्परय मोटे तौर पर अमेरकल, कनलडल, यूरोप, रूस, ऑस्ट्रेलयल और न्यूज़ीलँड जैसे देशलँ है, जबकल 'ग्लोबल साउथ' के अंतरगत एशयल, अफुरीकल और दकषणल अमेरकल के देश शलमलल हैं ।
- यह वरगीकरण अधकल सटीक है कयलँकल इन देशलँ में, शकलषल और स्वलस्थय देखभलल के संकेतक आदकल संदर्भ में कलफी समलनतलएँ हैं ।
- भारत और चीन जैसे कुछ दकषणल देश पछले कुछ दशकलँ में आरथकल रूप से वकलसतल हुए हैं ।
  - कई एशयलई देशलँ द्वारा हलसलल की गई परगतकल इस वचलर को चुनौतल देने के रूप में भी देखा जलतल है कलउत्तरी देश ही आदरश है ।

## पहले उपयलग की गई वरगीकरण परणलली:

- प्रथम वशल्व, द्वतलतीय वशल्व और तृतीय वशल्व के देश:
- प्रथम, द्वतलतीय और तृतीय वशल्व के देश [शीत युद्ध](#) कललीन अमेरकल, सोवयलत संघ के सहायक देशलँ और गुट-नरलपेकष देशलँ को संदर्भतल करते हैं ।
- वशल्व परणलली दृषटकलण:
- यह वशल्व रलजनीतकल देखने/समझने के परस्पर नज़रयल पर ज़ोर देतल है । उत्पादन के तीन परमुख कषेत्र हैं: कोर, परफरल और सेमी- परफरल ।
- अमेरकल यल जलपलन जैसे देशलँ में अतयलधुनकल तकनीकलँ की बहुतलयत होने के कारण कोर कषेत्र में अधकल ललभ होतल है ।
- दूसरी ओर, परफरल कषेत्र, कम परषुकृत उत्पादन में संलग्न हैं जो मूलतः शरम परधलन होतल है ।
- सेमी-परफरल ज़ोन इन दोनों के बीच में है जसमें भारत और बुरलज़ील जैसे देश शलमलल हैं ।
- पूरवी और पश्चमी देश:
- पश्चमी देश आम तौर पर अपने ललगलँ के बीच आरथकल वकलस और समृद्धकल उच्च स्तर को दर्शलते हैं, और पूरवी देशलँ को वकलस की इसी संक्रमण की परकरयल में मलनल जलतल है ।

## ग्लोबल उत्तर और ग्लोबल दकषणल के उदभव कल कारण:

### पूरव वरगीकरण की गैर-व्यवहलरयतल:

- शीत युद्ध के बलद के वशल्व में, प्रथम वशल्व/तलसुरल वशल्व वरगीकरण व्यवहलरय नहीं रह गयल थल, कयलँकल जब वरष 1991 में कम्युनसलट सोवयलत संघ कल वधलटन हुआ तो अधकलंश देशलँ के पलस पूंजीवलदी अमेरकल के साथ कसलँ स्तर पर सहयलग करने के अतरकलत कलई वकललप

नहीं था, जो उस समय एकमात्र वैश्विक महाशक्ति थी।

- पूर्व/पश्चिम देशों को अक्सर अफ्रीकी और एशियाई देशों के वषिय में रूढ़िवादी सोच बनाए रखने वालो के रूप में देखा जाता था।
- विभिन्न देशों को एक ही श्रेणी में वर्गीकृत करना अत्यधिक सरल माना जा रहा था।

## वैश्विक दक्षिण देशों में समानताएँ:

- अधिकांश वैश्विक दक्षिणी देशों का उपनिवेश बनने का इतिहास रहा है। [UNSC](#) की स्थायी सदस्यता से बहिष्करण के कारण अंतरराष्ट्रीय मंचों में इन देशों का प्रतिनिधित्व बहुत ही कम रहा है।
- अधिकांश वैश्विक दक्षिणी देशों के आज भी विकासशील रहने/कम विकसित होने का एक महत्वपूर्ण कारण यह बहिष्करण भी रहा है।

## दक्षिण-दक्षिण सहयोग के लिये की गई पहल:

- वैश्विक:
  - [ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका \(BRICS\) मंच](#)
  - [भारत, ब्राज़ील और दक्षिण अफ्रीका \(IBSA\) मंच](#)
  - [दक्षिण-दक्षिण सहयोग के लिये अंतरराष्ट्रीय दविस:](#)
    - मूल रूप से 19 दिसंबर को दक्षिण-दक्षिण सहयोग के लिये संयुक्त राष्ट्र दविस की तारीख को वर्ष 2011 में 12 सितंबर को स्थानांतरित कर दिया गया था।
    - यह उस तारीख को याद करता है जब [संयुक्त राष्ट्र महासभा \(UNGA\)](#) ने विकासशील देशों के बीच तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देने और लागू करने के लिये वर्ष 1978 में एक कार्य योजना अपनाई थी।
- भारतीय:
  - [ट्रिप्स छूट पर प्रस्ताव \(Proposal on TRIPS Waiver\):](#)
    - बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार संबंधी पहलुओं (TRIPS) में छूट जैसी पहली बार वर्ष 2020 में भारत और दक्षिण अफ्रीका द्वारा प्रस्तावित किया गया था, में कोविड-19 टीकों और उपचारों पर [बौद्धिक संपदा अधिकारों \(IPRs\)](#) की अस्थायी वैश्विक आसानी शामिल होगी, ताकि उन्हें वैश्विक स्वास्थ्य का समर्थन करने और महामारी से बाहर निकलने का रास्ता मिला जा सके। कोविड-19 टीकों, दवाओं, चिकित्सीय और संबंधित प्रौद्योगिकियों पर समझौता।
  - [वैकसीन मैत्री अभियान:](#)
    - वर्ष 2021 में भारत ने ["वैकसीन मैत्री"](#) पहल नामक अपना ऐतिहासिक अभियान शुरू किया जो ["नेबरहुड फर्स्ट नीति" \(Neighbourhood first policy\)](#) के अनुसार है।

## ग्लोबल साउथ के विकास हेतु बाधाएँ:

- [हरति ऊर्जा कोष जारी करना:](#)
  - वैश्विक उत्सर्जन के प्रतिग्लोबल नॉर्थ देशों के उच्च योगदान के बावजूद, वे [हरति ऊर्जा के वित्तपोषण](#) के लिये भुगतान की अपेक्षा कर रहे हैं, जिसके लिये अंतिम पीढ़ति सबसे कम उत्सर्जक हैं - कम विकसित देश।

## रूस-यूक्रेन युद्ध का प्रभाव:

- [रूस-यूक्रेन युद्ध](#) ने सबसे कम विकसित देशों (LDCs) को गंभीर रूप से प्रभावित किया जिससे खाद्य, ऊर्जा और वित्त से संबंधित चिंताएँ बढ़ गईं तथा LDCs की विकास संभावनाओं को खतरा उत्पन्न हो गया।
- [चीन का हस्तक्षेप:](#)
  - चीन बुनियादी ढाँचे के विकास के लिये [बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव \(BRI\)](#) के माध्यम से ग्लोबल साउथ में तेज़ी से पैठ बना रहा है।
  - हालाँकि, यह अभी भी संदेहास्पद है कि क्या BRI दोनों पक्षों के लिये लाभदायक होगा या यह केवल चीन के लाभ पर ध्यान केंद्रित करेगा।

## अमेरिकी आधिपत्य:

- विश्व को अब कई लोगों द्वारा बहुध्रुवीय माना जाता है लेकिन यह अकेला अमेरिका है जो अंतरराष्ट्रीय मामलों पर हावी है।।
- [संसाधनों तक अपर्याप्त पहुँच:](#)
  - महत्वपूर्ण विकासात्मक परियोजनाओं के लिये आवश्यक संसाधनों तक पहुँच में ग्लोबल नॉर्थ- साउथ वचिलन ऐतिहासिक रूप से प्रमुख अंतरालों की विशेषता रही है।
  - उदाहरण के लिये, औद्योगीकरण, वर्ष 1960 के दशक की शुरुआत से उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के पक्ष में झुका हुआ है और इस संबंध में वैश्विक अभिसरण का कोई बड़ा प्रमाण नहीं मिला।
- [कोविड-19 का प्रभाव:](#)
  - कोविड-19 महामारी ने पहले से मौजूद अंतराल को बढ़ा दिया है।
  - महामारी के शुरुआती चरणों से निपटने में न केवल देशों को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, बल्कि आज जनि सामाजिक और व्यापक आर्थिक प्रभावों का सामना करना पड़ रहा है, वे ग्लोबल साउथ के लिये अधिक खराब रहे हैं।

◦ घरेलू अर्थव्यवस्थाओं की भेद्यता अब अर्जेंटीना और मसिर से लेकर पाकस्तान और श्रीलंका तक के देशों में कहीं अधिक स्पष्ट है।

## भारत ग्लोबल साउथ की आवाज़ कैसे बन सकता है?

- वर्तमान समय में ग्लोबल साउथ को अग्रणी बनाने के लिये विकासशील देशों के बीच नदिनीय क्षेत्रीय राजनीति पर अंकुश लगाने हेतु भारत को सक्रिय भूमिका निभानी होगी।
- भारत को इस तथ्य को स्वीकार करने की आवश्यकता है कि ग्लोबल साउथ एक सुसंगत समूह नहीं है और न ही इसका कोई साझा एजेंडा है।
  - धन, शक्ति, व क्षमताओं के मामले में आज ग्लोबल साउथ में बहुत अंतर है।
  - यह विकासशील देशों के विभिन्न क्षेत्रों और समूहों के अनुरूप सक्रिय भारतीय भूमिका की आवश्यकता है।
- भारत पुरानी वैचारिक लड़ाइयों पर लौटने के बजाय व्यावहारिक परिणामों पर ध्यान केंद्रित करके उत्तर और दक्षिण के बीच एक पुल बनने के लिये उत्सुक है।
- यदि भारत इस महत्वाकांक्षा को प्रभावी नीति में बदल सकता है, तो सार्वभौमिक और विशेष लक्ष्यों की प्राप्ति आसानी से की जा सकती है।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

प्रश्न. निम्नलिखित में से कसि समूह में सभी चार देश G20 के सदस्य हैं? (2020)

- (A) अर्जेंटीना, मेक्सिको, दक्षिण अफ्रीका और तुर्की
- (B) ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, मलेशिया और न्यूजीलैंड
- (C) ब्राज़ील, ईरान, सऊदी अरब और वियतनाम
- (D) इंडोनेशिया, जापान, सिंगापुर और दक्षिण कोरिया

उत्तर: A

व्याख्या:

- यह 19 देशों और यूरोपीय संघ (EU) का एक अनौपचारिक समूह है, जिसकी स्थापना वर्ष 1999 में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा विश्व बैंक के प्रतिनिधियों के साथ हुई थी।
- सदस्य देश जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के 80% से अधिक का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे मजबूत वैश्विक आर्थिक विकास प्राप्त करने के लिये अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के प्रमुख मंच पर आए, जिसके लिये पेन्सिलवेनिया (USA) सितंबर 2009 में पेट्सबर्ग शिखर सम्मेलन में नेताओं द्वारा सहमति व्यक्त की गई थी।
- G-20 के सदस्य देशों में अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़ील, कनाडा, चीन, यूरोपियन यूनियन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, मेक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, कोरिया गणराज्य, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं।
- अतः विकल्प A सही उत्तर है।

**प्रश्न:**

प्रश्न. "डब्ल्यूटीओ के व्यापक लक्ष्य और उद्देश्य वैश्वीकरण के युग में अंतरराष्ट्रीय व्यापार का प्रबंधन और बढ़ावा देना है। लेकिन विकास और विकासशील देशों के बीच मतभेदों के कारण दोहा दौर की वार्ता व्यर्थ हो गई है। भारतीय परीक्षकों में चर्चा करें। (2016)

**स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस**